फतेहपुर

की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर

उत्तर भारत के महत्वपूर्ण जिलों में से एक फतेहपुर ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक दृष्टि से एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह जिला कानपुर एवं इलाहाबाद के मध्य गंगा एवं यमुना नदियों के दोआब में स्थित है। वैदिक साहित्य तथा पुराणों में भी फतेहपुर का उल्लेख मिलता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक अलेक्जेण्डर कनिंघम ने भी इस स्थान का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले पुरातात्विक स्थल असनी का विवरण दिया है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपने यात्रा विवरण में असनी का उल्लेख किया है।

स्थानीय परम्परा के अनुसार फतेहपुर नाम की उत्पत्ति जौनपुर के इब्राहीम शाह द्वारा अथगरिया के राजा सीतानन्द के साथ युद्ध में हुयी विजय के परिणामस्वरुप हुयी। एक अन्य स्रोत् के अनुसार फतेहमन्द खान द्वारा इस नगर की स्थापना की गयी।

पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस अंचल से प्राप्त अवशेष् मौर्य काल से ब्रिटिश काल तक के हैं जिनमें मूर्तियाँ मृदभाण्ड तथा मुद्रायें मुख्य रूप से शामिल हैं। फतेहपुर क्षेत्र के तिन्दुली, बहुआ, कुरारी तथा थिथौरा आदि से उत्तर गुप्तकालीन ईटों से निर्मित मन्दिरों के अवशेष प्राप्त हुये हैं। इतने विस्तृत क्षेत्र में फैले ईंट से निर्मित मंदिरों के लिए भी जनपद एक विशिष्ट स्थान रखता है।

फतेहपुर जनपद की भव्य सांस्कृतिक विरासत का दृश्य प्रस्तुत करते स्मारकों का विवरण इस प्रकार है:

ईंटों से निर्मित मन्दिर (बहुआ)

फतेहपुर बांदा राजमार्ग पर फतेहपुर से 21 किमी दूर, स्थानीय रूप से काकोरा बाबा के नाम से प्रसिद्ध, यह मंदिर पत्थर एवं ईटों से निर्मित है। इस मंदिर के स्तम्भ, स्थापत्य शिल्प तथा छत इत्यादि पत्थर से निर्मित हैं। इस मंदिर का गर्भगृह 2.05 मीटर X 1.95 मीटर परिमाप का है तथा इसके सम्मुख पूर्वाभिमुख मण्डप निर्मित है। इस मण्डप के कोने उन्नत हैं एवं यह तल–विन्यास में चौकोर है। प्रवेश द्वार देव प्रतिमाओं से अलंकृत द्वार शखाओं से सुसज्जित

ईंटो से निर्मित मन्दिर, बहुआ

किया गया है। गर्भगृह तक पहुँचने के लिये इसके सामने ईटों से निर्मित सोपान बनाये गये हैं। गर्भगृह में शेषशायी विष्णु की प्रतिमा विद्यमान हैं। शैलीगत विशेषताओं के आधार पर इस मन्दिर की निर्माण तिथि लगभग दसवीं शताब्दी ई० रखी जा सकती है। यह मन्दिर पाषाण एवं ईटों के समन्वित उपयोग से निर्मित मंदिर का उत्तम उदाहरण है।

ईंटों से निर्मित मंदिर (कुरारी)

फतेहपुर–बांदा राजमार्ग पर फतेहपुर से 20 किमी दूर तथा बहुआ ग्राम से लगभग 3 किमी पश्चिम उत्तर में कुरारी ग्रम स्थित है। एक प्राचीन तालाब के दक्षिणी तट पर ईटों से निर्मित यह समूह स्थित है। देवरा बाबा नाम से प्रसिद्ध मंदिर एक आधार पर स्थित है। मंदिर का मुख्य भवन 5 फुट वर्गाकार में है तथा इसका गर्भगृह (वाह्य भाग) षोडश कोणीय है। इस मन्दिर के वाह्य भाग पर ईटों से अत्यधिक अलंकरण किया गया है। मंदिर के गर्भगृह के अन्दर शैल वास्तुशिल्प के अनेक खण्ड विद्यमान हैं, जिनमें प्रवेशद्वार के कुछ भाग भी हैं। प्रथम मंदिर के पश्चिमी भाग में एक समतल टीले पर एक अन्य मंदिर के अवशेष मिलते हैं।

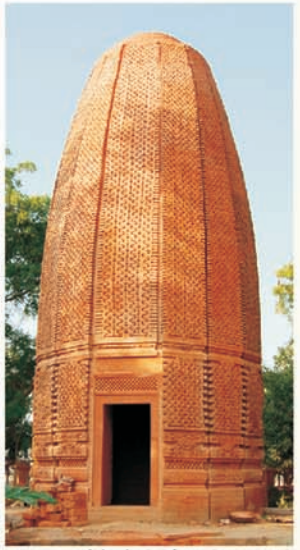

ईंटों से निर्मित मंदिर, कुरारी

ईंटों से निर्मित दो मन्दिर (ठिठौरा)

बहुआ से लगभग 10 कि० मी० उत्तर पूर्व मे स्थित ठिठौरा गांव के पूर्व मे भोरहरे बाबा नामक ईटों से निर्मित यह पूर्वाभिमुख मंदिर योजना में आयताकार है तथा इसके गर्भगृह की माप 1.55 मी० वर्गाकार है। इसके शिखर का निर्माण अलंकृत ईटों द्वारा हुआ है। मंदिर में सहायक प्रतिमाओं के साथ विष्णु की भग्न प्रतिमा विद्यमान है। ऐसा प्रतीत होता है कि मण्डप बाद में निर्मित किया गया होगा। गर्भगृह का भीतरी भाग सादा है। इस मंदिर की जगती के उत्तर–पूर्वी छोर पर एक अन्य छोटा सा मंदिर अवस्थित है ऐसा अनुमान है कि ऐसे ही मंदिर अन्य तीनों कोनों पर भी रहे होंगे और यह पंचायतन प्रकार का मंदिर रहा होगा। स्थापत्य शैली के आधार पर प्रतीत होता है कि इस मंदिर का निर्माण लगभग 10 शती० ई० में हुआ होगा।

ईंटो से निर्मित दो मन्दिर, ठिठौरा

ईंटों से निर्मित मंदिर (तेन्दुली)

ईंटों से निर्मित मंदिरों की मध्यकालीन शैली का प्रतिनिधित्व करने वाले इस पूर्वाभिमुख देवालय का वाह्य भाग तल–विन्यास की दृष्टि से वृत्ताकार है, जबकि गर्भगृह लगभग वर्गाकार है। तेन्दुली ग्राम स्थित इस मंदिर की गणना अपने अनूठे वास्तुविन्यास के कारण इस क्षेत्र के सर्वोत्तम मन्दिरों में की जाती है। इसकी छत कंगूरेदार है, जिसके अवलम्बन हेतु चार स्तंभ एवं वरंडिकाएँ प्रदान की गयी हैं। मंदिर के साथ एक द्वार–मण्डप बना है, इस पर इस्लामी वास्तु का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके द्वार–मण्डप का निर्माण अनुमानतः 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे हुआ होगा। मंदिर के गर्भगृह में 4'6" x 2'4" की कमल पर खडी पाषाण निर्मित चर्तुभुजी विष्णु की प्रतिमा प्रतिष्ठित है जो कि चर्तुभुजी बाबा के नाम से विख्यात है।

ईंटो से निर्मित मंदिर, तेन्दुली

प्रतिमा की भुजाएँ तथा सिराभाग खंडित है। वास्तु लक्षणों के आधार पर इस मन्दिर का निर्माण काल दसवीं शती ईसवीं रखा जा सकता है।

ईंटों से निर्मित दो मन्दिर (शिरहर/अमौली)

ईंटों से निर्मित दो मन्दिर, शिरहर/अमौली

फतेहपुर जनपद की तहसील बिन्दकी के अन्तर्गत अमौली एक प्राचीन स्थल है। यहाँ ईंटों से निर्मित दो मंदिर अपने समीपवर्ती क्षेत्र के अन्य मंदिरों, जैसे रार, परौली तथा भीतरगाँव इत्यादि के मंदिरों से तल–विन्यास, शैली, अलंकरण, गढ़न इत्यादि में समान हैं। इनमें से एक मंदिर, दूसरे मंदिर की तुलना में बड़ा है। भू–विन्यास में दोनों मंदिर पूर्णतः समान है। दोनों मंदिरों में एक गर्भगृह तथा एक मण्डप है। इन मंदिरों की वाह्य दीवारों का निर्माण अलंकृत ईटों से किया गया है।

बाग़ बादशाही एवं बादशाह औरंगज़ेब की बारादरी (खजुआ)

प्राचीन मुग़ल मार्ग पर स्थित खजुआ, बादशाह शाहजहां (1627–58 ई०) के दो पुत्रों, औरंगज़ेब एवं शाहशुजा के मध्य 5 जनवरी 1659 ई० को उत्तराधिकार के लिए हुए निर्णायक युद्ध के कारण मध्यकालीन इतिहास में विशेष स्थान रखता है। इस विजय के पश्चात् औरंगज़ेब ने यहाँ बारादरीयुक्त चारबाग, मस्जिद एवं कारवां सराय का निर्माण करवाया। ब्रिटिशकाल में यह स्थल नील के संवर्धन के उपयोग में लाया गया। बाग़ बादशाही के पूर्वी भाग में दो सोपानों में निर्मित लगभग तीन मीटर ऊंचे चबूतरे के ऊपर दो बारादरियां निर्मित हैं। खजुहा स्थित यह बाग़ मुग़ल बादशाह बाबर (1526–30 ई०) द्वारा प्रारंभ की गई बारादरी युक्त बाग़ निर्माण की परंपरा एवं जल वितरण प्रणाली के

बाग़ बादशाही एवं बादशाह औरंगज़ेब की बारादरी, खजुआ

अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

कर्नल टी० एस० पावेल की स्मृति में निर्मित स्मारक (कुंवरपुर)

कर्नल टी० एस० पावेल की स्मृति

यह स्मारक ब्रिटिश सेना की तेइसवीं रेजीमेंट के कर्नल टी० एस० पॉवेल की स्मृति में निर्मित है, जिन्होंने खजुहा के सन् 1857 ई० के स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजी सेना का संचालन किया था। इनकी मृत्यु खजुहा में,नवंम्बर 1857 ई० में, सिर में गोली लगने के कारण हुई थी।

ए० ब्लेकले की स्मृति में निर्मित स्मारक (आशापुर)

ए० ब्लेकले की स्मृति में स्मारक

फतेहपुर नगर के शल्य चिकित्सक ए० बी० पैलरसन के सबसे छोटे पुत्र ए० ब्लैकलेकी स्मृति में इस स्मारक का निर्माण किया गया था। यह स्मारक चारों ओर से एक कम ऊँची चारदीवारी से परिवेष्टित है।

पुरातात्त्विक टीला (असोथर)

इस विस्तृत टीले के संबंध में कहा जाता है कि स्थल प्राचीन अश्वत्थामापुर था। इस टीले के सबसे ऊँचे भाग पर

पुरातात्त्विक टीला, असोथर

स्मारक का निर्माण किया गया था। यह स्मारक चारों ओर से एक कम ऊँची चारदीवारी से परिवेष्टित है।

प्रत्नकीर्त्तिमपावृणु

प्रकाशक
अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, लखनऊ मण्डल,
नवां तल, केन्द्रीय भवन,
सेक्टर–'एच', अलीगंज, लखनऊ–226024
दूरभाषः–0522–2328220,2323904
ईमेल–circlelucknow.asi@gov.in

आलेखः निकिता चन्द्रा, विभा पाण्डेय, निधि वर्मा, डा० शमऊन अहमद।
डिजाइनः आकाश मिश्रा, भास्कर रमन।

फतेहपुर

की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर

प्रत्नकीर्त्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,

लखनऊ मण्डल